



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 31]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, जनवरी 24, 2008/माघ 4, 1929

No. 31]

NEW DELHI, THURSDAY, JANUARY 24, 2008/MAGHA 4, 1929

राष्ट्रपति सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 जनवरी, 2008

सं. 3-प्रेज/2008—राष्ट्रपति निम्न कार्यात्मक को अत्यंत असाधारण वीरता के लिए “अशोक चक्र” प्रदान करने का अनुमोदन करती हैं :—

आईसी-59263 मेजर दिनेश रघु रमण

जाट रेजिमेंट/34 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 2 अक्टूबर, 2007)

02 अक्टूबर, 2007 को 0820 बजे मेजर दिनेश रघु रमण ने जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले के एक गांव में अपनी कम्पनी को तैनात किया जहाँ आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ चल रही है। 0855 बजे संदिग्ध घरों के निकट जाते हुए मेजर रमण ने एक साथी अफसर की चीखें सुनीं जो बुरी तरह से जखमी हो चुका था। उच्च कोटि के सखाभाव और बंधुत्व भावना का परिचय देते हुए शत्रु की भारी गोलीबारी के बीच वे उसकी ओर रेंगते हुए गए। उन्होंने उसे और दो अन्य घायल सैनिकों को सुरक्षित निकाल लिया। उसके बाद उन्होंने उन दो आतंकवादियों का आमने-सामने से मुकाबला किया जिनके कारण सैनिक बड़ी मात्रा में हताहत हुए थे और बिल्कुल पास की भीषण लड़ाई में दोनों को मार गिराया। अन्य आतंकवादियों ने अब दूसरे घर से मेजर रमण पर गोलियां चलाई। इस गोलीबारी में मेजर रमण गंभीर रूप से घायल हो गए। अडिग रहते हुए वे अपने सैनिकों का नेतृत्व और प्रेरित करते हुए आतंकवादियों के विरुद्ध तब तक डटे रहे जब तक वे अचेत होकर गिर नहीं गए। बाद में अपने जख्मों के कारण वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

मेजर रमण ने उच्चकोटि के सखाभाव और नेतृत्व के अलावा अत्यंत असाधारण वीरता का परिचय दिया और राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

बरुण मित्रा, राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

NOTIFICATION

New Delhi, the 23rd January, 2008

No. 3-Pres/2008.—The President is pleased to approve the award of the “Ashoka Chakra” for most conspicuous gallantry to :—

IC-59263 MAJOR DINESH RAGHU RAMAN

JAT REGIMENT/34 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award 2nd October, 2007)

On 02 October, 2007 at 0820 hours, Major Dinesh Raghu Raman deployed his company in a village in Baramulla district of Jammu and Kashmir where an encounter with terrorists had commenced. At 0855 hours, while closing in on

suspected houses, Major Raman heard shouts of a fellow officer who had been seriously injured. Displaying camaraderie and esprit-de-corps of the highest order he crawled towards him under heavy hostile fire. He extricated him and two other injured soldiers to safety. He then took on two terrorists who had caused heavy casualties to the troops and in a fierce close quarter battle shot both of them dead. The other terrorists now fired on Major Raman from another house. In the ensuing firefight, Major Raman was seriously injured. Undeterred, he continued leading and motivating his troops and pinned down the terrorists till he fell unconscious. He later succumbed to his injuries.

Major Raman displayed most conspicuous bravery besides camaraderie and leadership of the highest order and made the supreme sacrifice for the nation.

BARUN MITRA, Jt. Secy. to the President